सिन्धु घाटी सभ्यता (हड़प्पा सभ्यता) का संक्षिप्त विवरण

1. यह सभ्यता कांस्य युग (ताम्रपाषाण काल) के अंतर्गत आता है|

2. इस सभ्यता का विस्तार पश्चिम में बलूचिस्तान तक, पूर्व में आलमगीरपुर (उत्तर प्रदेश) तक, दक्षिण में दाइमाबाद (महाराष्ट्र) तक और उत्तर में मंदा (जम्मू-कश्मीर) तक था|

3. इस सभ्यता में किसानों और व्यापारियों का प्रभुत्व था जिसके कारण इस सभ्यता को कृषि-वाणिज्यिक सभ्यता के रूप में जाना जाता है|

4. इस सभ्यता को हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि 1921 में सर्वप्रथम हड़प्पा नामक स्थान पर ही दयाराम साहनी की देखरेख में खुदाई के माध्यम से इस सभ्यता की खोज की गई थी|

5. रेडियोकार्बन डेटिंग के आधार पर सिंधु घाटी सभ्यता का काल 2500-1750 ईसा पूर्व के आसपास निर्धारित किया गया है|

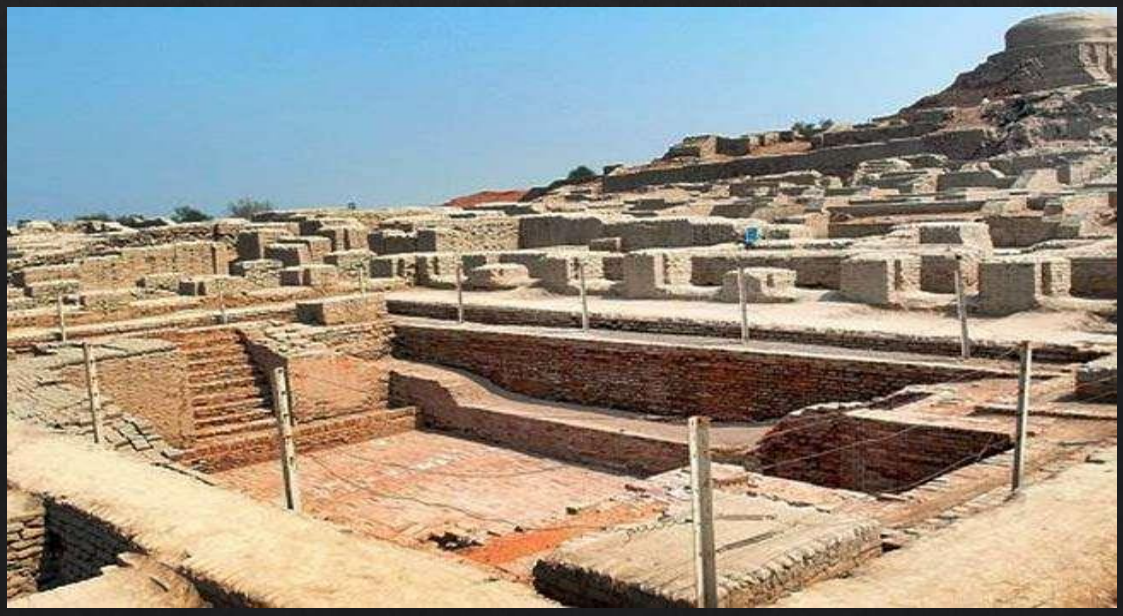

6. इस सभ्यता की सबसे प्रमुख विशेषता इसकी "नगर योजना" थी| इस सभ्यता के दौरान शहरों को दो भागों दुर्ग (शासक वर्ग द्वारा अधिकृत) और निचले शहर (आम लोगों का निवास स्थान) में विभाजित किया गया था|

7. धौलावीरा इस सभ्यता का एकमात्र स्थल है जहाँ शहर को तीन भागों में विभाजित किया गया था|

8. चहुन्दरो एकमात्र ऐसा शहर था जहाँ दुर्ग नहीं थे|

9. इस सभ्यता में नगर योजना "ग्रिड प्रणाली" पर आधारित थी| इस सभ्यता के लोग भवन निर्माण के लिए पके हुए ईंटों को इस्तेमाल करते थे| इसके अलावा नालियों का उत्तम प्रबंध, किलाबन्द दुर्ग और लोहे के औजारों की अनुपस्थिति इस सभ्यता की प्रमुख विशेषताएं थी|

10. सिन्धु घाटी सभ्यता के लोगों ने सर्वप्रथम कपास का उत्पादन किया था जिसे ग्रीक भाषा में "सिनडम" कहा जाता है और यह सिंध से प्राप्त हुआ था|

11. सिन्धु घाटी सभ्यता के लोग बड़े पैमाने पर गेहूं और जौ का उत्पादन करते थे| उनके द्वारा उगाये जाने वाले अन्य फसल दाल, धान, कपास, खजूर, खरबूजे, मटर, तिल और सरसों थे।

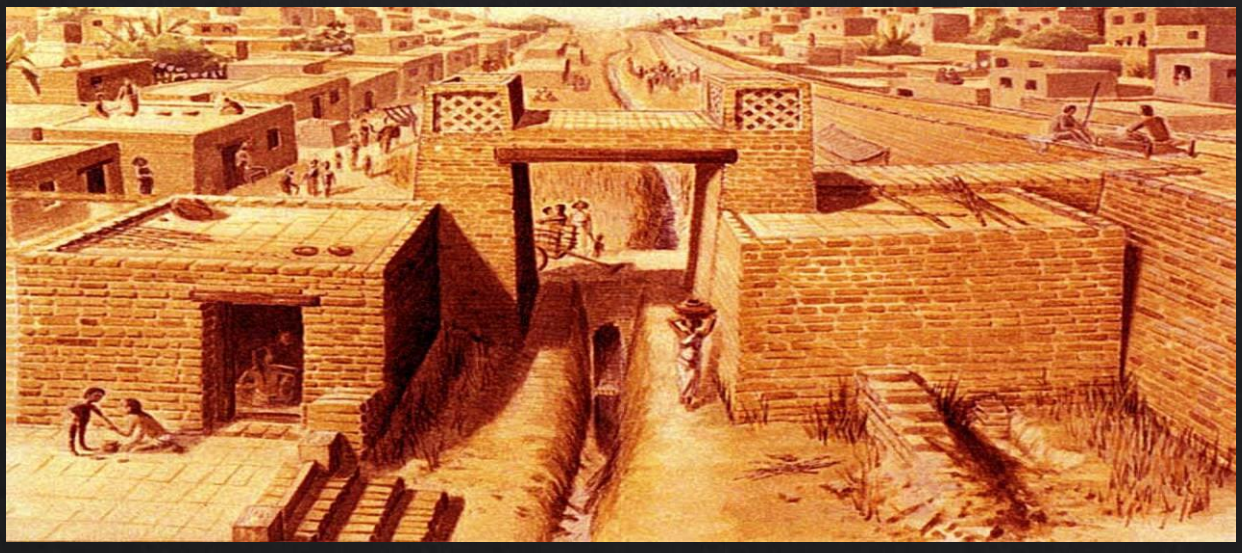

12. इस काल के ज्ञात पशुओं में बैल, भेड़, भैंस, बकरी, सूअर, हाथी, कुत्ता, बिल्ली, गधा और ऊंट प्रमुख थे।

13. इस सभ्यता का सबसे महत्वपूर्ण पशु "बिना कूबड़ वाले बैल" या "एक सींग वाला गैंडा" था|

14. इस सभ्यता के दौरान बाह्य और आंतरिक व्यापार विकसित अवस्था में था, लेकिन भुगतान "वस्तु-विनिमय प्रणाली" द्वारा होता था|

15. इस सभ्यता के लोगों ने स्वतः ही वजन और माप प्रणाली विकसित की थी, जो 16 के अनुपात में थी|

16. शवों को दफनाने या जलाने का काम उत्तर-दक्षिण दिशा में किया जाता था|

17. हड़प्पा संस्कृति की सबसे कलात्मक कृति "शैलखड़ी की मुहरें" हैं| हड़प्पा कालीन लिपि चित्रात्मक थी लेकिन अभी तक इसे पढ़ा नहीं जा सका है| इस लिपि में पहली पंक्ति दाएं से बाएं ओर और दूसरी पंक्ति बाएं से दाएं ओर लिखी जाती थी| इस शैली को सर्पलेखन (Boustrophedon) कहा जाता है।

18. सिन्धु घाटी सभ्यता की खुदाई से "स्वस्तिक" के निशान भी मिले हैं|

19. मूर्तियों के माध्यम से पता चलता है कि सिन्धु घाटी सभ्यता के दौरान देवी माँ (मातृदेवी या शक्ति) की पूजा होती थी| इसके अलावा "योनि" (महिला यौन अंग) के पूजा के सबूत भी मिले हैं|

20. इस काल के प्रमुख पुरुष देवता "पशुपति महादेव" अर्थात पशुओं के भगवान (आद्य-शिव) थे| जिनकी आकृति खुदाई से प्राप्त एक मुहर पर मिली है| इस आकृति में एक पुरुष योगमुद्रा में बैठे हुए हैं एवं चार जानवर (हाथी, बाघ, गैंडा और भैंस) से घिरे हुए हैं| इसके अलावा उनके पैरों के पास दो हिरण खड़े हैं| सिन्धु घाटी सभ्यता के दौरान "शिवलिंग" की पूजा भी व्यापक रूप से होती थी|

21. इस काल के लोगों का मुख्य व्यवसाय "कताई", "बुनाई", "नाव बनाना", "सोने के आभूषण बनाना", "मिट्टी के बर्तन बनाना" और "मुहरें बनाना" था|

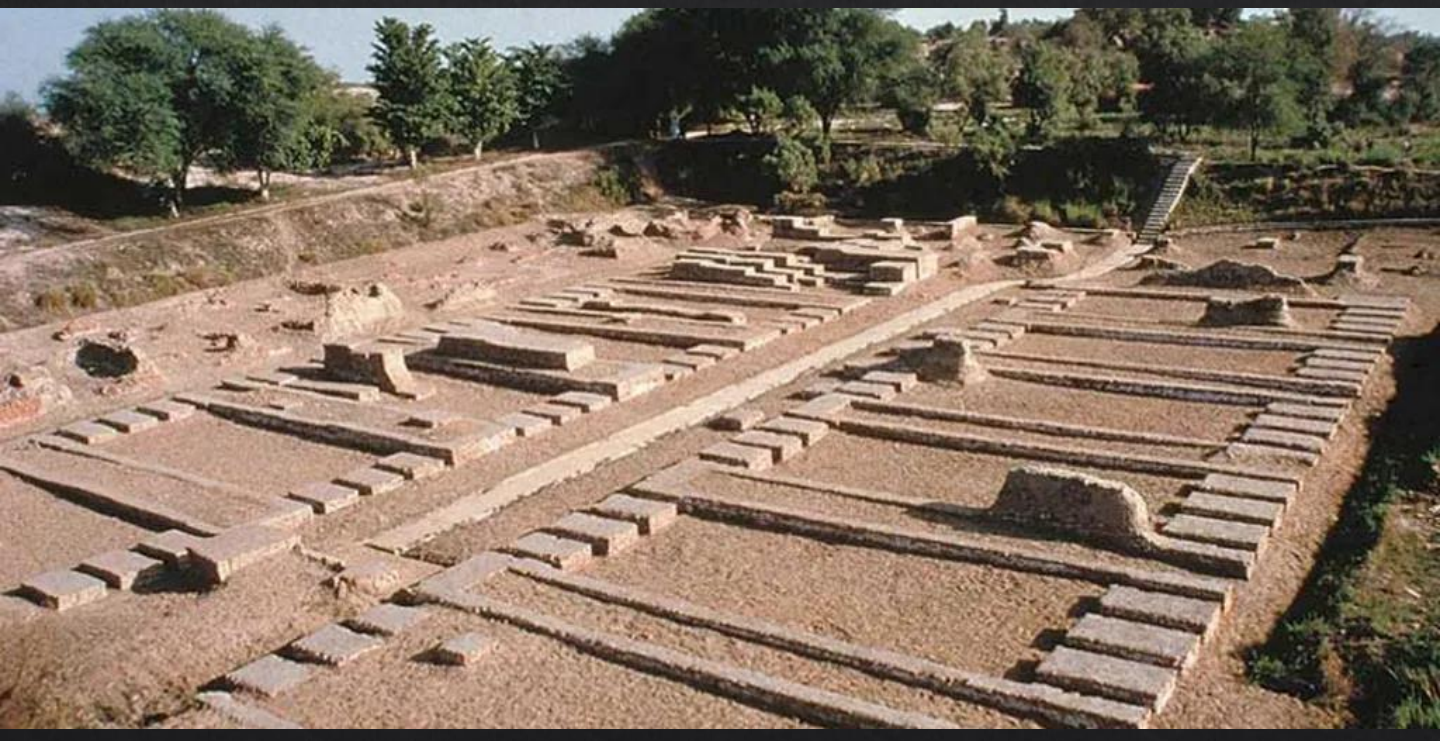

आर्यों का आगमन

इंड़ो आर्यन भाषा बोलने वाले लोग उत्तर- पश्चिमी पहाड़ों से आये थे तथा पंजाब के उत्तर पश्चिम में बस गए तथा बाद में गंगा के मैदानीय इलाकों में जहाँ इन्हे आर्यन या इंडो- आर्यन के नाम से जाना गया | ये लोग इंडो-ईरानी, इंडो- यूरोपीय या संस्कृत भाषा बोलते थे | आर्यन की उत्पति के बारे में सही जानकारी नहीं है, इस पर अलग अलग विद्वानो के अलग विचार हैं | ये कहा गया है कि आर्यन्स अल्प्स के पूर्व(यूरेशिया), मध्य एशिया, आर्कटिक क्षेत्र, जर्मनी तथा दक्षिणी रूस में रहे |

घटना क्रम :

1500 B.C और 600 B.C के युग को पूर्व वैदिक युग (ऋग वैदिक काल) तथा बाद के वैदिक युग में विभाजित किया गया |

पूर्व वैदिक काल : 1500 B.C – 1000 B. C; यह वह युग था जब आर्यन्स भारत पर आक्रमण कर सकते थे |

बाद का वैदिक युग : 1000 B. C – 600 B. C

वैदिक काल की विशेषताएँ

ऋगवेद : यह 10 किताबों से बना है और इसमे 1028 भजन हैं जिन्हे अलग अलग ईश्वरों के लिए गाया गया है | मण्डल II से VII को पारिवारिक पुस्तक के नाम से जानते थे क्युकि यह पारिवारिक कथाओं जैसे गृतसमदा, विश्वामित्र, बामदेव, आरती, भारद्व्जा और वसीष्ठा पर आधारित थे |

उपनिषद

ऐसा नहीं है कि आत्मा, पुनर्जन्म और कर्मफलवाद के विषय में वैदिक ऋषियों ने कभी कुछ सोचा ही नहीं था। ऐसा भी नहीं था कि इस जीवन के बाद आने वाले जीवन के बारे में उनका कोई ध्यान न था। ऋषियों ने यदा-कदा इस विषय पर विचार किया भी था। इसके बीज वेदों में यत्र-तत्र मिलते हैं, परंतु यह केवल विचार-मात्र था। कोई चिंता या भय नहीं। आत्मा शरीर से भिन्न तत्व है और इस जीवन की समाप्ति के बाद वह परलोक को जाती है, इस सिद्धांत का आभास वैदिक ऋचाओं में मिलता अवश्य है, परंतु संसार में आत्मा का आवागमन क्यों होता है, इसी खोज में वैदिक ऋषि प्रवृत्त नहीं हुए।

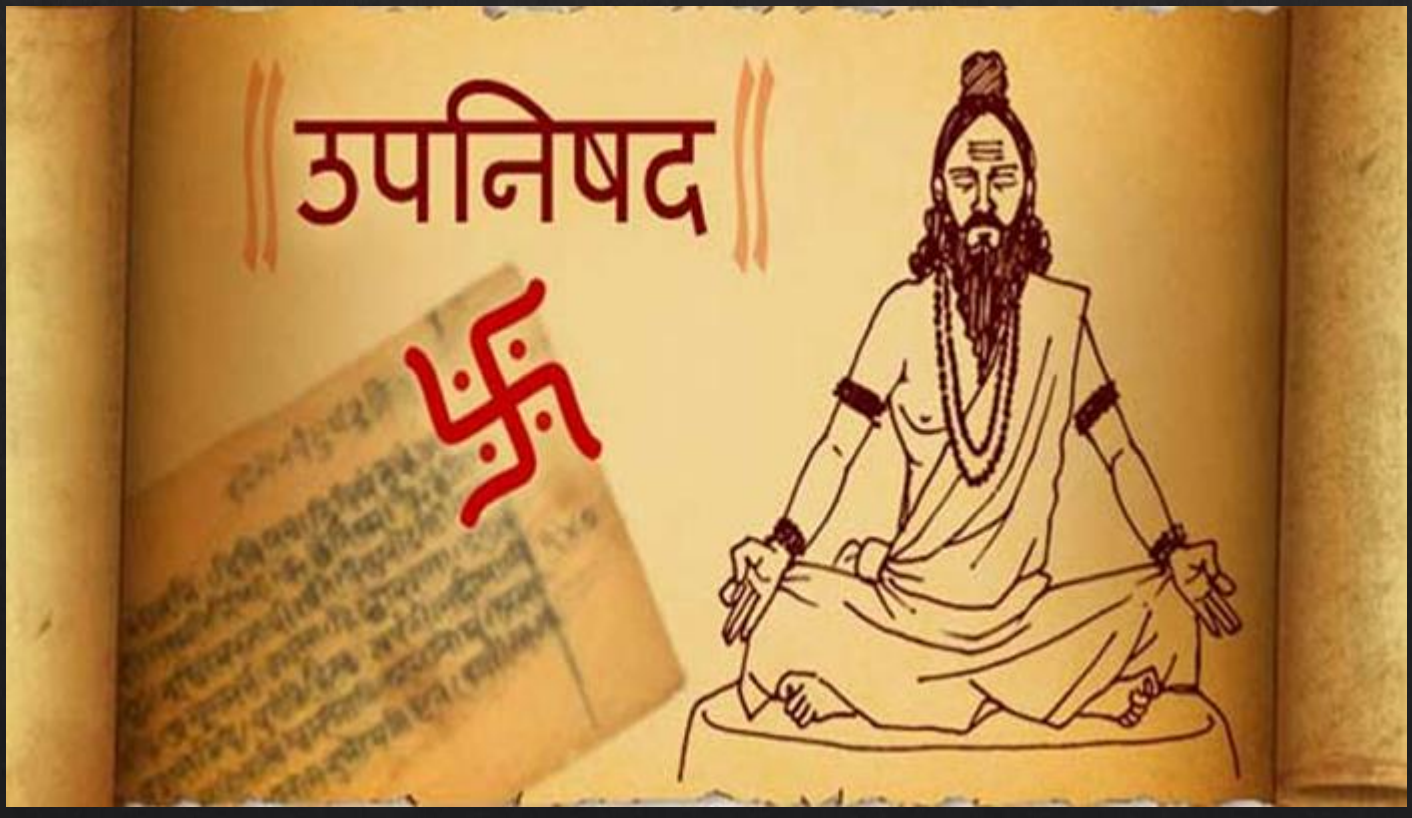

भौतिकवाद

भौतिकवाद पर लिखे गए साहित्य की रचना उपनिषदों के ठीक बाद हुई |आरंभ में इनको ताड़पत्रों पर लिखा गया कागज पर लिखने का प्रचलन काफी बाद में हुआ |भारत में भौतिकवाद दर्शन का प्रचलन रहा और जनता उससे प्रभावित भी रही|भौतिकवादी दृष्टिकोण में काल्पनिक देवताओं के अस्तित्व को भी नकारा है|भौतिकवादी एक ऐसी विचारधारा थी जो कर्म में विश्वास करती थी वह संसार के अलावा स्वर्ग नर्क आत्मा आदि पर विश्वास नहीं करते थे

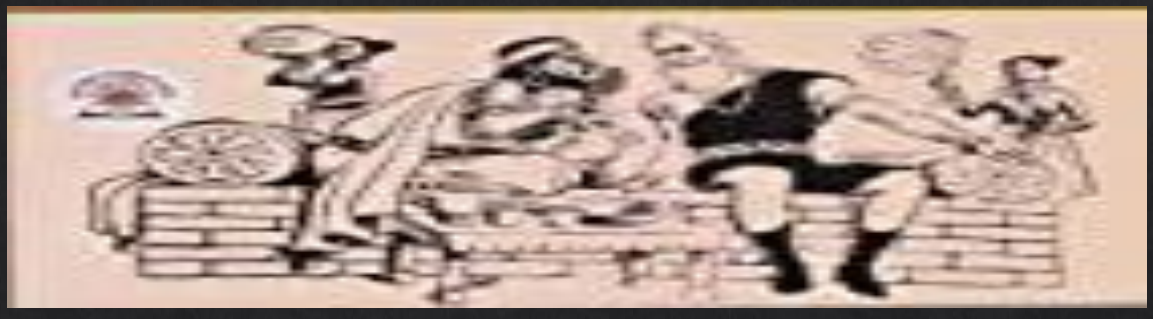

महाकाव्य इतिहास परंपरा और मिथक

रामायण और महाभारत प्राचीन भारत के दो महाकाव्य हैं| इनमें समय-समय पर कुछ ना कुछ जोड़ा जाता रहा है|इनमें भारतीय आर्यों के आरंभिक समय का वर्णन है|इन दोनों ग्रंथों का भारतीय जीवन पर अत्यंत गहरा प्रभाव पड़ा है| इन ग्रंथों में उच्चतम बुद्धिजीवी से लेकर शिक्षित देहाती और साधारण अनपढ़ तथा देहाती तक के लिए बहुत कुछ उपलब्ध है| यूनानी तथा अन्य देशवासियों की तरह प्राचीन काल में भारतीय इतिहासकार नहीं थी इसलिए तिथियों का निर्धारण करना कठिन हो गया|इतिहास जानने के लिए हमें अन्य ग्रंथों के कल्पित इतिहास समकालीन अभिलेख शिलालेख कलाकृति आदि साहित्य के विशाल संग्रह की मदद लेनी पड़ती है |इसके अलावा विदेशी यात्रियों के विवरणों से भी जानकारी मिलती है|

महाभारत

रामायण को महाकाव्य के रूप में एक महान रचना माना जाता है |परंतु महाभारत को विश्व की श्रेष्ठतम रचनाओं में से गिना जाता है |इस समय तक शायद भारत में विदेशियों का आगमन शुरू हो चुका था ,उनकी परंपराएं तथा अनेक विवाद यहां बसे आर्यों की परंपराओं से मेल नहीं खा रहे थे| नई स्थिति में वैदिक धर्म में संशोधन किया जा रहा था और इनके बीच से एक उदार धर्म का जन्म हुआ जिसे हिंदू धर्म के नाम से जाना जाता है |इसका प्रमुख आधार सत्य था ,जहां तक पहंचने के लिए अनेक रास्ते हैं| महाभारत में विराट युद्ध का वर्णन भी है जिसमें अखंड भारत की अवधारणा की शुरुआत हुई उस समय अफगानिस्तान का एक बड़ा हिस्सा भारत में शामिल था इसी कारण यहां के शासक की पत्नी गांधारी कहलाई गांधार के पास ही हस्तिनापुर इंद्रप्रस्थनगर थे जो उस समय भारत की राजधानी थी तथा वहीं इंद्रप्रस्थ आज दिल्ली नाम से भारत की राजधानी है |इस महाकाव्य में कौरवों पांडवों के विराट युद्ध का वर्णन भी है |साथ ही अनेक अनमोल चीजों का समृद्ध भंडार भी है|

भगवत गीता

भगवत गीता महाभारत का ही अंश है जो अपने आप में पूर्ण हैं इसमें 700 श्लोक हैं और इसकी रचना बौद्ध काल में हुई थी |गांधी जी ने भी इसे अहिंसा में अपनी दृढ़ विश्वास का आधार बनाया था |संकट के समय या दुविधा ग्रस्त स्थिति में मनुष्य को इससे मार्गदर्शन प्राप्त होता है |महाभारत की कथा का आरंभ महाभारत का युद्ध होने से पहले अर्जुन और कृष्ण के बीच होने वाला संवाद है |अर्जुन के लिए वह स्थिति बड़ी ही कठिन थी जब वह अपने परिजनों मित्रों के विरुद्ध युद्ध में खड़ा था ,ऐसे में श्री कृष्ण ने उन्हें कर्म के लिए प्रेरित किया इससे अर्जुन की दुविधा दूर हुई और वह कर्म करने के लिए तत्पर हुए |भगवत गीता में अकर्मण्यता की निंदा करते हुए कर्म और जीवन को समय के उत्तम आदर्श के अनुरूप बताया है|

प्राचीन भारत में जीवन और कर्म

इस समय तक भारत उन्नति की ओर कदम बढ़ा चुका था| ग्राम सभाएं स्वतंत्र थी गांव 10-10 और 100 -100 के समहों में बटा हुआ था| लोहारों ,कम्हारों तथा अन्य पेशा करने वीलों के गांव अलग हुआ करते थे |यह सभी गांव शहरों के आसपास हुआ करते थे क्योंकि वहां सामान की खपत अच्छा हुआ करती थी |भारत में लेखन कला भी काफी पुरानी है पाणिनि ने सस्कृत भाषा में प्रसिद्ध व्याकरण की रचना की थी और इसे आज भी सस्कृत व्याकरण का आधिकारिक ग्रंथ माना जाता है| भारत चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में भी विकास कर चुका था औषध विज्ञान का जनक धनवंतरी को माना जाता है ईसवी सन के आरंभ में औषधि पर चरक और शल्य चिकित्सा पर सुश्रुत दवारा पुस्तकें लिखी गई महाकाव्यों के उस युग में वनों में स्थित महाविद्यालयों का वर्णन भी मिलता है जहां लोग शिक्षण प्रशिक्षण के लिए एकत्र हुआ करते थे शिक्षा में तरह तरह के विषयों को शामिल किया गया था किंतु यहां विद्यार्थियों को शहरी और आकर्षण से दूर वन में नियमित और ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता था| उस समय तक्षशिला विश्वविद्यालय विशेष रूप से विज्ञान शास्त्र चिकित्सा शास्त्र और कलाओं की शिक्षा दी जाती थी| बौद्ध काल में तो यह ज्ञान का केंद्र बन गया था |

महावीर और बुद्ध वर्ण व्यवस्था

जैन और बौद्ध दोनों धर्म वैदिक धर्म को से कटकर अलग हुए थे |पर उन्होंने वेदों को प्रमाण नहीं माना |दोनों ही धर्मों में अहिंसा पर बल दिया गया था |जैन धर्म के संस्थापक महावीर और बुद्ध दोनों समकालीन थे |बौद्ध साहित्य में बुद्ध के जन्म के संबंध में लिखा है कि उनका जन्म मई जून के महीने में पूर्णिमा के दिन हुआ था |बौद्ध धर्म में जाति व्यवस्था को स्वीकार नहीं किया इसी कारण वह अपने दृष्टिकोण और विचारों में ज्यादा स्वतंत्र रहा| बुद्ध का मार्ग मध्यम मार्ग था उनके अनुसार अतिशय करने से व्यक्ति अपने शरीर की शक्ति खो देता है और फिर वह सही रास्ते पर आगे नहीं बढ़ पाता |

चंद्रगुप्त और चाणक्य मौर्य साम्राज्य की स्थापना

चंद्रगुप्त और चाणक्य ने राष्ट्रीयता का पुराना नारा बुलंद कर लोगों को विदेशी आक्रमणकारियों के विरुद्ध उत्तेजित किया। उसी राष्ट्रीयता की पुकार सुनकर लोग उसके साथ हो गए और चंद्रगुप्त ने विजय हासिल करते हुए पाटलिपुत्र पर अधिकार कर मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। चाणक्य राजनीति शास्त्र की रचना करने वाला भी था। चाणक्य का दूसरा नाम कौटिल्य था ।इस युग के बारे में जानने के लिए एक प्राचीन नाटक उपलब्ध है मुद्राराक्षस इसमें चाणक्य की तस्वीर उभरती है कि किस तरह वह अपने प्रतिद्वंदी से बदला लेने के लिए किसी भी नीति का प्रयोग करता था। वह साहसी ,षड्यंत्र कारी ,अभिमानी और प्रतिशोधई था। जो कभी अपने अपमान को नहीं भूलता था। वह साम्राज्य की बागडोर अपने हाथ में संभाल लेता है और सम्राट को स्वामी नहीं अपने शिष्य की तरह दिखता है।

अशोक

273 ईसा पूर्व में अशोक इस महान साम्राज्य का उत्तराधिकारी हुआ। इस अद्भुत शासक को आज भी भारत और एशिया के दूसरे बहुत से भागों में प्यार से याद किया जाता है। कलिंग के युद्ध के बाद उसके द्वारा जो भयंकर कत्लेआम हुआ उसे देखकर उसका हृदय परिवर्तित हुआ और उसने बुद्ध की शिक्षाओं के प्रचार ,नेकी, सद्भाव के काम, प्रजा के हित तथा सार्वजनिक कार्यों के लिए खुद को समर्पित कर दिया।